साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

दि कार्मिक पोस्ट

वर्ष : 5, अंक : 41 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 3 जून से 9 जून 2020 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

मोदी का लोगों से पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाने का आग्रह

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से पर्यावरण दिवस पर प्रकृति के साथ गहरा रिश्ता बनाने का संकल्प लेने की अपील करते हुए कहा है कि पर्यावरण का सीधा संबंध हमारे बच्चों के भविष्य से है, इसलिए पांच जून को प्रकृति को बचाने की तरफ कदम बढ़ाते हुए कुछ पेड़ अवश्य लगाएं।

श्री मोदी ने 'मन की बात' में कहा कुछ दिन बाद ही पांच जून को पूरी दुनिया 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाएगी। पर्यावरण सीधे हमारे जीवन, हमारे बच्चों के भविष्य का विषय है, इसलिए हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी इसकी चिंता करनी होगी। मेरा आपसे अनुरोध है कि इस 'पर्यावरण दिवस' पर अवश्य कुछ पेड़ लगाएं और प्रकृति की सेवा के लिए कुछ ऐसा संकल्प अवश्य लें जिससे प्रकृति के साथ आपका हर दिन का रिश्ता बना रहे।

उन्होंने कहा ''इस साल 'विश्व पर्यावरण दिवस' की विषय वस्तु जैव-विविधिता है। वर्तमान परिस्थितियों में यह विषय वस्तु विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। लॉकडाउन के दौरान पिछले कुछ हफ्तों में जीवन की रफ्तार थोड़ी धीमी जरूर हुई है, लेकिन इससे हमें अपने आसपास, प्रकृति की समृद्ध विविधता को, जैव-विविधता को, करीब से देखने का अवसर भी मिला है। आज कितने ही ऐसे पक्षी जो प्रदूषण और शोर-शराबे में ओझल हो गए थे, सालों बाद उनकी आवाज़ को लोग अपने घरों में सुन रहे हैं। अनेक जगहों से, जानवरों के उन्मुक्त विचरण की खबरें भी आ रही हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने भी सोशल मीडिया पर इस बारे में पढ़ा है और वीडियो भी देखे हैं। उन्होंने लिखा बहुत लोग लिख रहे हैं, तस्वीरें साझा कर रहे हैं कि वे अपने घर से दूर-दूर पहाड़ियां देख पा रहे हैं। दूर-दूर जलती हुई रोशनी देख रहे हैं। इन तस्वीरों को देखकर कई लोगों के मन में ये संकल्प उठा होगा कि क्या हम उन दृश्यों को ऐसे ही बनाए रख सकते हैं। इन तस्वीरों ने लोगों को प्रकृति के लिए कुछ करने की प्रेरणा भी दी है।

उन्होंने कहा नदियां सदा स्वच्छ रहें, पशु-पक्षियों को भी खुलकर जीने का हक़ मिले, आसमान भी साफ़-सुथरा हो, इसके लिए हम प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीवन जीने की प्रेरणा ले सकते हैं।

भूटान के साथ पर्यावरण के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौते को मंजूरी

नयी दिल्ली। सरकार ने पड़ोसी देश भूटान के साथ पर्यावरण के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पत्र (एमओयू) पर हस्ताक्षर की स्वीकृति दे दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में यहाँ केंद्रीय मंत्रिमंडल की बुधवार को हुई बैठक में इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी गयी। यह एमओयू 10 साल की अवधि के लिए होगा। दोनों देश में लागू कानूनों और कानूनी प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए समानता और पारस्परिक लाभों के आधार पर दोनों देशों को पर्यावरण के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में निकट भविष्य में और दीर्घकालिक में सहयोग में यह मददगार होगा।

क्या प्रदूषण पर भी लॉकडाउन संभव है?

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस है। पर्यावरण की चिंता करने वाले और उसे लेकर अपने स्तर पर लगातार प्रयास करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए लॉक डाउन का यह समय आंतरिक खुशी प्रदान करने वाला रहा है। प्रकृति साफ हुई और नदियां, समद्र, जीव-जंतु सभी के जीवन में एक हरियाली लौटी है।

हालांकि इस हरियाली और राहत की एक कीमत भी मनुष्य सभ्यता ने चुकाई है। एक महामारी के चलते, जिसका आज भी इलाज नहीं मिल पाया है और जिसने पूरी दुनिया में मृत्यु का तांडव मचाया हुआ है हैरान करता है। इस महामारी के चलते सब ठप हुआ है, लॉक डाउन ने दुनिया भर के करोड़ों लोगों को घर में कैद करके रख दिया है।

यकीनन इस शांति ने हमारे पर्यावरण को बदला है, लेकिन इसकी कीमत से समझौता नहीं किया जा सकता। सवाल यह है कि क्या प्रदूषण को मनुष्य महामारी के बहाने नहीं बल्कि अपने स्तर पर, आदतों द्वारा और उसका सरंक्षण करते हुए नहीं बचा सकता। क्या पर्यावरण को बचाने के लिए प्रदूषण पर हमेशा के लिए लॉक डाउन नहीं लग सकता।

भले ही देश भर में कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए लगे लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था व सामाजिक ढांचे को तहस-नहस करने का काम किया हो, लेकिन मौजूदा देशव्यापी लॉकडाउन का सबसे सकारात्मक प्रभाव वायु प्रदूषण में नाटकीय ढंग से आई कमी है।

वैश्विक आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले 60 वर्षों में किए गए तमाम प्रयासों और जलवायु परिवर्तन के असंख्य वैश्विक समझौतों के बावजूद पर्यावरणीय स्थिति में वो सुधार नहीं हो पाया था जो पिछले 60 दिनों में वैश्विक लॉकडाउन के चलते हुआ है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का एक अनुमान है कि वायु प्रदूषण के चलते हर साल करीब 70 लाख मौतें होती हैं। लॉकडाउन के कारण जहरीली गैसों के उत्सर्जन में अस्थाई कमी आना निश्चित रूप से एक बड़ी राहत है, लेकिन यह कमी भारत जैसे देश के लिए कोई स्थायी समाधान नहीं है।

पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए देश जिस लक्ष्य को लेकर चला है वो कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा दिए बगैर हासिल नहीं हो सकता दूसरी तरफ हम बिना सांस लिए भी आगे नहीं बढ़ सकते। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड एनवायरनमेंट की डायरेक्टर डॉक्टर मारिया नीरा के मुताबिक, अगर देशों में प्रदूषण का उच्च स्तर होता है तो कोविड-19 से उनकी लड़ाई में इस पहलू पर भी विचार करना जरूरी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वायु प्रदूषण के चलते कोविड-19 मरीजों की मृत्यु दर में इजाफा होने की आशंका है। अमेरिका में 90 प्रतिशत मौत उन शहरों में हुई जहां वायु प्रदूषण अधिक है। इटली में हुए इस तरह के शोध में यह बात सामने आई है कि जिन जगहों पर वायु प्रदूषण अधिक है वहां कोरोना के चलते होने वाली मौतों में इजाफा हुआ है।

इटली के उत्तरी भाग में वायु प्रदूषण अन्य इलाकों की अपेक्षा काफी ज्यादा है और यहां कोरोना से मरने वालो की संख्या भी करीब तीन गुना ज्यादा है।

अगले 20 साल में विलुप्त हो जाएंगी 500 से ज्यादा प्रजातियां

अगले 20 वर्षों में वन्यजीवों की 500 से ज्यादा प्रजातियों का अस्तित्व नहीं बचेगा। एक ताजा अध्ययन से पता चला है कि धरती पर वन्यजीवों के छठे सामूहिक विलुप्तीकरण का अध्ययन मंडराने लगा है। शोध से जुड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर कुदरत के साथ भयानक इंसानी खिलवाड़ नहीं होता, तो यह वन्यजीव 10 हजार साल तक धरती पर रहते। आज आलम यह है कि सुमात्राई राइनो, विशाल एस्पानोला कछुआ और हार्लेक्विनमेंढक जैसे रीढ़ की हड्डी वाले जमीनी वन्यजीवों की तादाद तो एक हजार से भी कम रह गई है। आंकड़ों के मुताबिक, 77 प्रजातियों की 94 फीसदी आबादी खत्म हो गई है। शोधकर्ताओं ने वन्यजीवों की इस स्थिति के दूरगामी प्रभाव पड़ने की चेतावनी दी है। उनका कहना है कि विलुप्तीकरण अपरिवर्तनीय होता है और एक प्रजाति के खत्म होने से उस पर निर्भर दूसरी प्रजाति का अस्तित्व भी खतरे में पड़ना निश्चित है।

515 प्रजातियों की आबादी एक हजार से भी कम मिली

प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज के जर्नल में प्रकाशित इस शोध में 29,400 से ज्यादा रीढ़ वाली स्थानीय प्रजातियों के आंकड़ों को खंगाला गया है। इसमें 515 प्रजातियों की आबादी 1 हजार से कम मिली है इनमें से आधी प्रजातियों के तो ढाई सौ जीव ही बचे हैं। वहीं 388 प्रजातियों की आबादी 5000 से नीचे पहुंच गई है। नेशनल ऑटोनॉमस यूनिवर्सिटी ऑफ मैक्सिको में पारिस्थितिकी की जेरारडो सेबलोस गोंजालेज का कहना है कि 2001-2014 के बीच 173 प्रजातियां विलुप्त हुई हैं।

इंसानी भविष्य के लिए जैव विविधता जरूरी

वैज्ञानिकों के अनुसार, मानव के अच्छे स्वास्थ्य और संतुलित पर्यावरण के लिए जैव विविधता बेहद जरूरी है। जब-जब कुदरत के साथ खिलवाड़ होता है। वह अपना कहर बरपाती है। कोरोनावायरस इसका ताजा उदाहरण है। उनका कहना है लगातार बढ़ती इंसानी आबादी के कारण जानवरों के आवास का नष्ट होना, वन्यजीवों की खरीद-फरोख्त, प्रदूषण और जलवायु संकट खतरनाक हुआ है। ऐसे में इंसानी भविष्य के लिए जरूरी है कि इन समस्याओं से तत्काल निपटा जाए।

पर्यावरण के लिए संजीवनी है देव वृक्ष, हमारी आस्था का केंद्र भी

पीपल , बरगद, पाकड़, आंवला व नीम आदि को देव वृक्ष के श्रेणी में रखा गया है। बिहार में कैमूर की मिट्टी भी इसके लिए अच्छी है। इन वृक्षों से अन्य पेड़ों के अपेक्षा ऑकसीजन की आपूर्ति भी अधिक मात्रा में होती है। इसी के आधार पर ये पूज्य हुए और हमारी आस्था का सुदृढ़ हुई। लेकिन विकास की दौड़ में वृक्षों की अनदेखी होनी लगी। जिसका समय समय पर उसका खामियाजा भी भुगतना पड़ता है। समय समय पर प्रदूषण चरम पर पहुंचता है तो वन विभाग के साथ साथ सभी लोगों को देव वृक्ष या यूं कहें तो फाइकस प्राजाति के पौधों की याद आने लगती है। ग्लोबल वार्मिंग भी इसका ही एक उदाहरण है। आज इस बदलते परिवेश में समय की बहुत ही कीमत है। हर किसी के पास पर्यावरण संरक्षण के लिए समय नहीं। इसी का परिणाम है कि आज हर मौसम का आनंद लोग नहीं उठा पाते। वो दिन दूर नहीं जब मौसम की मार से लोग परेशान होंगे। भाग दौड़ भरी जिदगी में लोग पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना भूल गए हैं। कभी कभार बाजार से दो तीन पौधे लाकर अपने बगानी या गमले में लगाकर छत पर रख दिए और हो गया पर्यावरण संरक्षण। लेकिन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कोई कदम नहीं उठाता। जिससे की हमारी अगली पीढ़ी को एक अच्छा वातावरण दे सके। शहरीकरण करने, ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क चौड़ीकरण तथा कई निजी कार्यों के लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। जिससे पेड़ों की संख्या में हर दिन कमी आ रही है। लेकिन विभाग इस बारे में अनजान है। विदेशी पौधे बढ़ा रहे शोभा- जिला के कई कार्यालयों में विदेशी पौधे शोभा के लिए लगाए गए हैं। जहां की वो घरों का शोभा मात्र बन कर रह गए हैं। विदेशी किस्म के पौधें उतनी मात्रा में आक्सीजन देने का काम नहीं करते जितने की देववृक्षों द्वारा आक्सीजन मिलता है। एक रिसर्च के मुताबिक देववृक्षों से 24 घंटे में 14-18 घंटे आक्सीजन देने का काम करते हैं। लेकिन फिर भी लोग विदेशी पौधों के पिछे पागल है। मगर एक खास बात यह है कि विदेशी किस्म के पौधो को न तो कोई पशु खाता है और न ही उसको हर दिन पानी देने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर समय की पाबंदी ने देववृक्षों से लोगों का नाता तोड़ दिया है। देव वृक्षों में शामिल पौधे- दरअसल पौधों को देववृक्ष कहने का काम सर्व प्रथम किसानों ने किया। हिन्दू समाज में आज भी कई पेड़ पौधों को पूजा जाता है। जहां एक ओर लोग उसे धर्म की दृष्टि कोण से देखते हैं तो दूसरी ओर साइंटिफिक। हिन्दू धर्म में पीपल, आम, तुलसी, आंवला आदि पौधों की पूजा की जाती है। जबकि उपरोक्त पौधे 18 घंटे आक्सीजन देने का काम करते हैं। जिसमें की आम, जामुन, आंवला, नीम, शिशम, तुलसी, महोगनी, आदि पौधे देववृक्ष के नाम से जाने जाते हैं। इसके अलावा देववृक्षों से लोगों को फल फुल की भी प्राप्ति होती है। वहीं विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो इसको फाइकस प्रजाति के पौधे कहें जाता है। इस साल वन महोत्सव मे ज्यादा तर विभाग की ओर से विदेशी पौधे लगाए गए। क्या कहते हैं डीएफओ- इस संबंध में पूछे जाने पर डीएफओ विकास अहलावत ने बताया कि जिले में वन महोत्सव के दौरान करीब तीन लाख पौधे लगाए गए थे। जिसमें फाइकस प्रजाति को अधिक महत्व दिया गया। नर्सरी में भी फलदार ही पौधे लगाए गए है।

भूमि पेडनेकर की पहल पर

पर्यावरण बचाने के लिए एकजुट हुए बॉलीवुड एक्टर्स

एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर इन मुश्किल हालात में लोगों को पर्यावरण बचाने के लिए जागरूक कर रही हैं. इस काम के लिए भूमि ने भामला फाउंडेशन और पर्यावरण मंत्रालय के साथ हाथ मिलाया है।

भूमि के इस अभियान को बॉलीवुड के कई एक्टर्स का समर्थन मिल गया है. अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और अनुष्का शर्मा जैसे मशहूर एक्टर्स भी पर्यावरण की रक्षा करने के लिए लोगों को जागरूक कर रहे हैं। अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और अनुष्का शर्मा ने आने वाले विश्व पर्यावरण दिवस पर शुरू होने वाले वन विश फॉर द अर्थ अभियान के तहत जलवायु

परिवर्तन के प्रति सचेत रहने परिवारों और समुदायों के बीच जागरूकता पैदा करने की अपील की है। भूमी पेडनेकर ने अपने इस अभियान से जुड़ने के लिए अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और अनुष्का शर्मा का सोशल मीडिया पर शुक्रिया अदा किया है. भूमि ने तीनो एक्टर्स को क्लाइमेट वॉरियर बताया है। हाल ही में शेयर किए गए एक वीडियो संदेश में भूमि ने इस बात पर भी रोशनी डाली थी कि इंसान के लालच के चलते पर्यावरण ख़राब हुआ है. यही वजह है कि अब प्रकृति अपना विकराल रूप दिखा रही है. कभी अम्फान तूफान की तबाही देखने को मिल रही है तो कभी बाढ़ की। भूमि ने सभी से अपील की है कि इस पर्यावरण दिवस पर हर कोई धरती की रक्षा करने की ठाने. उन्होंने चेतावनी दी है कि अभी अगर धरती की रक्षा नहीं की गई तो आने वाला समय और ख़तरनाक होगा। बता दें कि इस 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर भूमि पेडनेकर वन विश फॉर अर्थ नाम के इस अभियान की शुरुआत कर रही है. उनके इस अभियान का मकसद लोगों को पर्यावरण बचाने के प्रति जागरूक करना है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जैव-विविधता संरक्षण जागरूकता संबंधी कार्य करेगा राज्य आनंद संस्थान

भोपाल। राज्य आनंद संस्थान इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को जैव-विविधता संरक्षण पर जन-जागरूकता बढ़ाने की पहल करेगा। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम टाईम फॉर नेचर है, जो जैव-विविधता के संरक्षण पर केन्द्रित है। इसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इस दिशा में जन-सामान्य को प्रेरित करना है। संचालक राज्य आनंद संस्थान श्रीमती नुशरत महेदी ने बतायाकि संस्थान के सभी आनंदक कोविड-19 से संबंधित सावधानियों को ध्यान में रख स्वैच्छिक प्रयासों से जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करेंगे। आनंदक उत्प्रेरक की भूमिका में रहेंगे।

राज्य आनंद संस्थान संचालक ने बताया कि कोविड-19 ने जहां एक ओर दुनिया भर में कई विकट चुनौतियां पैदा की हैं, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत व जीवंत नजारे भी देखने को मिल रहे हैं। पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है। पर्यावरणीय समस्या का यह अल्पकालिक सुधार स्थायी समाधान नहीं है। किसी भी महामारी के फौरन बाद आर्थिक विकास की रफ्तार को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने को ध्यान में रख मानव, प्रकृति और आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता होती है।

राज्य आनंद संस्थान संचालक ने बताया कि टाईम फॉर नेचर जैव-विविधता के संरक्षण पर केन्द्रित कार्यक्रमों की सभी आनंदक अपनी स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर योजना बना सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता अभियान के लिए एसएमएस, फेसबुक, ट्विटर, ईमेल के जरिये लोगों को जागरूक किये जाने के लिए कहा गया है। लोग सोशल एवं डिजिटल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर जाकर संकल्प लें कि भविष्य में वे कम से कम अपने घर और आसपास के पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के प्रयास करेंगे। रीसाइकलिंग, सौर ऊर्जा, बायो गैस, बायो खाद, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग जैसी तकनीक अपनाने पर बल दें। जहां सम्भव हो पौधारोपण, स्वच्छता अभियान, पेंटिंग, वाद-विवाद, निबंध-लेखन जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित कर सकते हैं।

ऑनलाइन आयोजन

राज्य आनंद संस्थान संचालक ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन ऑनलाइन किया जा सकता है। इसमें एसएमएस, फेसबुक, ट्विटर, ईमेल का समावेश करते हुए यू ट्यूब एवं सोशल मीडिया के अन्य माध्यमों पर परिचर्चा, संवाद एवं व्याख्यान आदि का आयोजन किया जा सकता है। संचालक ने कहा कि जैव विविधता के संरक्षण के लिए हमें अपने स्वयं के हित में मानसिकता विकसित करनी होगी। इसके लिये हमारे दिन प्रतिदिन के प्रयास ही जैव विविधता को संरक्षित कर सकते हैं। इसके साथ ही वनों का पौधों का, पेड़ों का विनाश रोकना, अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना और व उससे भी महत्वपूर्ण उनका संरक्षण करना है। उपलब्ध जल संसाधनों का किफायती उपयोग, मरूस्थलीय क्षेत्रों को सिचिंत कर उन्हें उपजाऊ व हरा-भरा बनाने के प्रयास, खदानों के अनियंत्रित खनन पर पाबंदी, कृषि भूमि का उपयोग रोटेश्नल फसल लगाकर करने, खनिज के किफायती उपयोग के संबंध में जागरूकता बढ़ाना है। जल के महत्व को समझाते हुए नदियों व जलाशयों में विषैले रासायनिक पदार्थो का मिलना आदि विषय एवं कार्यक्रम शामिल किये जा सकते हैं। सभी प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को समझ उनके संरक्षण की मानसिकता विकसित हो सकें।

संस्थान के डिप्लॉएड, मास्टर ट्रेनरआनंदम सहयोगी एवं आनन्दको द्वारा कार्यक्रमों में पर्यावरणविद, विद्यार्थी, स्वैच्छिक संस्थाएं, युवा वर्ग, काउंसलर, समाजसेवी, मोटिवेशनल स्पीकर्स, शिक्षाविद, विचारक, बुद्धिजीवी वर्ग को ऑनलाइन सहभागिता हेतु प्रेरित किया जा सकेगा। कार्यक्रम में ऑनलाइन संगोष्ठी अथवा विमर्श के माध्यम से वक्ता अपने विचार और सुझाव शेयर कर सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान में पूरे विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल पर्यावरण विभाग ही नहीं वरन आम लोगों को भी सार्थक प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान में पूरे विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल पर्यावरण विभाग ही नहीं वरन आम लोगों को भी सार्थक प्रयास करने होंगे। विकास के नाम पर पेड़ों की बली के चलते पर्यावरण संरक्षण आज के युग की बड़ी चुनौती बनकर उभरा है।पर्यावरण संरक्षण से तात्पर्य पर्यावरण की सुरक्षा करना है। वृक्ष दृवनस्पतियों का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है. वे मनुष्य के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। वे मानव जीवन का आधार हैं, परन्तु आज मानव इनके इस महत्व व् उपयोग को न समझते हुए इनकी उपेक्षा कर रहा है। गौण लाभों को महत्व देते हुए इनका लगातार दोहन करता चला जा रहा है। जितने वृक्ष कटते हैं,उतने लगनी भी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है और इनकी संख्या लगातार घटती जा रही है। परिणामतरू अनेकों समस्याएँ मनुष्य के सामने उपस्थित हो रही है

ब्रह्मा ने सौंदर्य स्वरुप जंगलों में वृक्ष पेड़ पौधों के रूप में इसलिए बनाया कि मनुष्य से पूर्व इस धरा पर प्रकट किया। जो फलफूल देने वाले थे। जो जीवों के जीवन पालन पोषण कर सके। जो जीवों के भूख को मिटा सकें वही नदियों का जल उज्जवल पीकर प्यास बुझा सके। तो वही पेड़ पर पक्षियों के रहने का स्थान बने और अपने जीवन का यापन कर सके।पर मनुष्य जब इस धरती पर आया तो मनुष्य ने अपनी बुद्धि के अनुरूप अपने घर घरथी बनाकर रहने लगा ओर आकर्षित धरा पर पेड़ पौधों को अपने खाने पीने सोने साधन उपलब्ध कर लिया यही नहीं औषधि भी ढूंढ़ ली और इस तरह विकास की ओर बढ़ता रहा। तकनीकी के द्वारा खाद्य पदार्थ का प्रयोग करने लगा। फिर कल कारखाने बनाये जिससे वह अपने जीवन को प्रगति की ओर ले जाता रहा रुका नहीं. फिर कल कारखाने से जो धुवां निकलने से पर्यावरण संरक्षण में बाधा आई जिससे बीमारियों का फैलाव होने लगा इतना होने लगा कि आज वो दूषित जल दूषित वायु प्रदूषण जहर बन कर उभर रहा है। कल कारखाने से दूषित धुआं जो निकलता अपने जीवन का नास करने को आतुर हैं। मनुष्य अपनी धुन का पका अपने पग पसार ता चला गया कभी यह नहीं समझा कि जीवनका यह अनमोल उपहार स्वरूप प्रकृति अनुपम अपने पर्यावरण का आलौकिक वरदान स्वयं उस विधाता का दिया हैं। जिसे कैसे बिगाड़ने देगा वह हर समय हर पल निगेरबान है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं पर जान बुझ कर अनजान बना बैठा है और चाँद से अब मंगल ग्रह पर जा पँहुचा। बड़े बड़े वाहन हवाई जहाज आदि से धुआं ही धुआं निकलता है वही सभी बीमारियों का कारण बना है।कि शुद्ध वायु नहीं मिल रही जिससे आज कैंसर टी.बी.सुगर हार्ट अटैक आदि बीमारियां बहुत तेजी से बढ़ रही हैं।अगर अभी भी अपने जीवन को बचाना है तो पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है जिससे स्वच्छ होगा अपना जीवन का भविष्य होगा।भावी पीढ़ी यानि आने वाली संताने स्वास्थ्य होगी तो संसार दुनियां चलेगी. पर कोई नहीं समझता बस पैसे कमाने हैं। बस यही कारण है जो आज देश विदेश कोरोना जैसी महामारी से बीमारी से झूझ रहा हैं अगर जीव जंतुओं और पेड़ पौधों को सुरक्षित रखेंगे तो देख लेना ये जीवन का सौंदर्य हम कभी भूला नहीं पायेंगे और कभी पर्यावरण का आलौकिक रूप नहीं भी भूला पायेंगे क्योंकि जीवन होगा तभी सुख पा सकेंगे। अभी भी समय हैं पेड़ लगाओं जीवन पाओं...। हरि भरी वसुंधरा का ये कौन चित्रकार हैं। अद्भुत कला का भण्डार है शब्द शब्द चीत्कार हैं। धरा बनी है दुल्हन जैसे ओढ़े हरी चुनर ऐसे।

पर्यावरण को स्वस्थ रखेंने और प्रकृति, हरियाली से होंगे लाभ

प्रकृति मूक, सहनशील व गंभीर है लेकिन हद से अधिक छेड़छाड़ वह पसंद नहीं करती। उसके धैर्य व सहनशीलता को उसकी कमजोरी समझने की भूल हम बरसों से कर रहे हैं लेकिन याद रखें कि वह लाचार नहीं, वह अपना प्राकृतिक न्याय अवश्य करती है। उसकी न्याय प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। कहीं भयंकर बाढ़ तो कहीं सूखा, कभी ज्वालामुखी तो कभी भूकंप। इन्हें प्रकृति की चेतावनी समझ हमें क्षमायाचना प्रारंभ करनी चाहिए, उसे हरियाली ओढ़नी का उपहार देकर वह सहृदया स्नेही उदारमना मां शायद हम बच्चों की मूर्खता को भूल समझ माफ करें।

पर्यावरण को स्वस्थ व स्वच्छ बनाने, प्रकृति के प्रबंधन के घटक जल, वायु, वसुधा व नभ के आदान-प्रदान में सहायक बन उसके संरक्षण में नारी की भूमिका अहम हो सकती है क्योंकि वह स्वयं संवेदनशील, समझदार, दूरदर्शी व स्नेह प्रेम की मूर्ति होती है। मां, बहन, बेटी या पत्नी के रूप में वह अपने बच्चों, भाइयों, पिताओं या पतियों की सबसे बड़ी हितचिंतक होती है साथ ही वह इस प्रकृति मां के अति दोहन व शोषण की पीड़ा को भी अच्छे से समझ सकती है। इसलिए वह हर रूप में हर व्यक्ति को पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण के संस्कार बड़ी आसानी से दे सकती है।

आज आवश्यकता है कि जन-जन में पर्यावरण के प्रति संवेदना जागृत हो, प्रकृति से सहज जुड़ाव बढ़े, तभी पर्यावरण को दूषित करने वालों के प्रति आक्रोश होगा व हम स्वप्रेरणा से स्वयं के हित में प्रयास करेंगे। यह संस्कार नारी ही दे सकती है। प्रकृति के कोप से बचने के लिए, भावी पीढ़ी को विरासत में स्वस्थ पर्यावरण देने व प्रकृति को पुनः समृद्ध बनाने कुछ प्रयास प्राथमिकता समझ होने चाहिए।

1. हम अपनी मां से सबसे अधिक प्यार करते हैं और उसे विभिन्न अवसरों पर उपहार दे उसे प्रसन्न करने का प्रास करते हैं। वैसे ही प्रकृति की हरियाली लौटा पेड़-पौधों का अधिक से अधिक रोपण व संरक्षण कर धरती मां को खुश करना होगा। 2. पानी का अपव्यय रोकने का हर संभव प्रयास हो। 3. पेट्रोल आदि का किफायती उपयोग करने के लिए पूल-कार की आदत बनाए। 4. अपने घर आंगन में पेड़-पौधों के साथ पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी रखकर उनके प्रति संवेदना दिखाएं। 5. अपना कचरा कहीं भी सड़क पर न फैलाकर बीमारियों को रोकने का प्रयास करें। स्वच्छ व स्वस्थ कालोनी बनाने के लिए कृतसंकल्प हो शहर आप ही सुंदर होगा। 6. विभिन्न अवसरों पर पेड़-पौधे भेंट कर स्नेह संबंधों को मजबूत बनाने की मानसिकता विकसित कर इसे परंपरा बनाएं। 7. प्राकृतिक संपदाओं का मोल समझे पानी, बिजली, गैस, पेट्रोल किफायत से वापरें। 8. आधुनिकता का बाना ओढ़ना है तो पर्यावरण के प्रति जागरूक हो इसका प्रमाण दें। 9. पॉलीथीन का उपयोग न करने का प्रण लें व बाजार जाते समय थैली ले जाने की आदत बनाएं। 10. एक साथ खाना खाकर, टी.व्ही. देखकर संबंधों को पुनः सजीव करें व बिजली की बचत करें।

पेड़-पौधों, प्रकृति व हरियाली से कई लाभ होते हैं जैसे -

1. सुंदर फूल, हरी घास व पेड़ों पर चहकते पक्षी मन में सकारात्मक ऊर्जा भर आपकी कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। 2. पेड़-पौधों व फूलों के रंगों की विविधता उनकी खुशबू, हवा के ठंडे झोंके तनाव समाप्त कर मन को प्रसन्नता से भर देते हैं। 3. प्रकृति की निकटता से ईश्वर के प्रति आस्था को जगाता है जिससे अहं भाव मिटता है व जीवन सरल हो जाता है। 4. पौधों पर खिलने वाले फूल नई जिंदगी का नई आशाओं का संदेश देते हैं जिससे चिंताएं व परेशानियां दूर होती हैं। 5. शुद्ध हवा से स्वस्थ व निरोगी हो प्रसन्न हुआ जा सकता है। 6. पेड़-पौधों से लगाव अनायास ही प्रेम व विश्वास बढ़ाता है जिससे रिश्तों की नींव गहरी होती है। 7. पेड़-पौधों को दिया जल पुनः वर्षा के रूप में लौटता है, जलस्तर को बढ़ाता है। 8. हरी घास में बैठने का आनंद, भरी गरमी में ठंडी हवा के झोंके, सर्दी में धूप सेंकने का आनंद, फूलों के विभिन्न रंग जीवन के सच्चे सुख की अनुभूति कराते हैं। 9. इन मूक पेड़-पौधों का समर्पित भाव हममें स्वार्थ, कपट, बैर जैसी भावनाओं का दमन करने में सक्षम होता है। 10. पेड़-पौधों को लगाकर हम सृजन का सुख अनुभव करते हैं। इससे प्रकृति के प्रबंधन, पानी व पर्यावरण का संरक्षण कर हम भावी पीढ़ियों के लिए स्वस्थ रहने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

पर्यावरण की दशा-दिशा 2020

भारत में विस्थापन बढ़ाते चक्रवात

भारत के समुद्री इलाकों को प्रभावित करने वाले तूफानों में निसर्ग का नाम भी जुड़ गया है। अरब सागर में उठा यह तूफान महाराष्ट्र को प्रभावित कर रहा है। भारत ही नहीं दुनियाभर में चक्रवातों की तीव्रता बढ़ी है और इसके साथ ही बढ़ा है इससे होने वाला विस्थापन। स्टेट ऑफ इंडियाज एनवायरमेंट इन फिगर्स 2020 रिपोर्ट के अनुसार, साल 2019 में दुनियाभर में 24.9 करोड़ लोग विस्थापित हुए। इनमें से 23.9 करोड़ लोगों का विस्थापन प्राकृतिक आपदाओं का नतीजा था। इन आपदाओं में भी चक्रवात, समुद्री तूफान और आंधी के कारण 1.19 करोड़ लोगों का विस्थापन हुआ।

इंटरगवर्नमेंट पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) ने 1990 में पाया था कि जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रभाव पलायन और विस्थापन के रूप में दिखाई देगा। यह आकलन अब प्रबल होता जा रहा है। जानकार मानते हैं कि 2020 तक 20 करोड़ लोग विस्थापित होंगे। दिसंबर 2019 में जारी वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट 2020 बताती है कि हर साल हिंसा और संघर्ष की तुलना में प्राकृतिक आपदाओं से लोग अधिक विस्थापित हो रहे हैं। इसके साथ ही अधिक से अधिक देश इन आपदाओं का शिकार हो रहे हैं।

इंटरनल डिस्प्लेसमेंट मॉनिटरिंग सेंटर (आईडीएमसी) 2018 से प्राकृतिक आपदाओं से विस्थापित हुए लोगों आंकड़ा जुटा रहा है। आईडीएमसी के अनुसार, 2018 के अंत तक 16 लाख लोग प्राकृतिक आपदाओं के चलते विस्थापित हुए। 2018 में भारत में सबसे अधिक विस्थापन हुआ। नवंबर 2017 में ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट और यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम द्वारा प्रकाशित क्लाइमेट चेंज रिपोर्ट में कहा गया है कि 2016 में 2.4 करोड़ लोग बाढ़ और चक्रवात के कारण अचानक विस्थापित हो गए। ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट का अनुमान है कि 2030 तक दुनियाभर में 32.5 करोड़ लोगों पर जलवायु परिवर्तन से संबंधित आपदाओं का खतरा मंडराएगा।

भारत पर खतरा सबसे अधिक

विश्व बैंक का कहना है कि 2019 में दुनियाभर में जितने लोग विस्थापित हुए, उसमें 20 प्रतिशत भारत से हैं। भारत में 50 लाख लोग जलवायु आपदाओं से केवल 2019 में विस्थापित हो गए। 2008-2019 के बीच भारत में हर साल औसतन 36 लाख लोग विस्थापित हुए। इस विस्थापन का बड़ा कारण मॉनसून के दौरान आई बाढ़ रही है लेकिन इस दौरान चक्रवात भी विस्थापन का एक प्रबल कारण बनकर उभरा है।

पिछले साल आए फानी, वायु, माहा और बुलबुल चक्रवात से क्रमशः 18.2 लाख, 28.9 लाख, 2,846 और 1.86 लाख लोग विस्थापित हो गए। मई 2020 में अंफन चक्रवात के चलते पश्चिम बंगाल और ओडिशा में 1.9 करोड़ लोग विस्थापित हुए और 1.7 करोड़ लोगों के घर उजड़ गए। निसर्ग चक्रवात को देखते हुए करीब 20 हजार लोगों को अपने घरों से निकाला जा चुका है। कुछ दिनों बाद बंगाल की खाड़ी में एक और चक्रवात आने की आशंका जताई जा रही है। आंशका है कि ये दोनों चक्रवात बड़ी संख्या में लोगों को विस्थापित करेंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008